2016
भूगोल आदर्श प्रश्न पत्र
द्वितीय प्रश्न पत्र

समयः तीन घण्टे 15 मिनट पूर्णांक : 35

निर्देशः

i- **प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।**

ii- **सभी प्रश्न अनिवार्य है।**

iii- **प्रश्न संख्या 1 से 5 तक बहु–विकल्पीय हैं। प्रश्न संख्या 6 से 7 तक अति लघु–उत्तरीय हैं, जिनका प्रत्येक उत्तर लगभग 20 शब्दों में, प्रश्न संख्या 11 से15 तक लघु–उत्तरीय हैं, जिनका प्रत्येक उत्तर लगभग 100 शब्दों में और प्रश्न संख्या 16 से 18 तक विस्तृत उत्तरीय हैं, जिनका प्रत्येक उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए।**

iv- **सभी प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक उनके सम्मुख अंकित हैं।**

v- **आवश्यकतानुसार उपयुक्त रेखा–मानचित्रों एवं आरेखों द्वारा अपने उत्तरों की पुष्टि कीजिए।**

(बहु–विकल्पीय प्रश्न)

1. एस्किमों पाये जाते है–
   (क) साइबेरिया में (ख) नार्वे वस्वीडन में (ग) फिन लैण्ड (घ) अलास्का में
2. निम्न में से कौन सा देश विकसित है–
   (क) मिस्त्र (ख) पाकिस्तान (ग) चीन (घ) कनाडा
3. यूरोपीय आर्थिक समुदाय के देशों द्वारा जारी मुद्रा का नाम है–
   (क) यूरो मार्क (ख) यूरो फ्रांक (ग) यूरो डालर (घ) यूरो पौण्ड
4. बाम्बे–हाई के लिये प्रसिद्ध है–
   (क) बाक्साइड के लिये (ख) कच्चा तेल के लिये (ग) मत्स्य उत्पादन के लिये (घ) जहाज रानी के लिये
5. निम्न में से कौन सी फसल बागानी नही है–
   (क) रबड़ (ख) गेहूँ (ग) कहवा (घ) चाय

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

6. संयुक्त राज्य अमेरिका की दो झीलों का नाम लिखिए।
7. चीन की दो प्रमुख खाद्यान्न फसलों का नाम लिखिए।
8. पश्चिमी घाट के दर्रो के नाम लिखिए।
9. भारतीय सीमा का दक्षिणतम बिन्दु कहॉ स्थित है? इसे किस नाम से जाना जाता है ।
10. भारत में वनों पर आधारित किन्ही दो उद्योगों का नाम बताइये?

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

11. विकासशील देशों की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
12. मिस्त्र के लिए नील नदी के महत्व का वर्णन कीजिए।
13. भारत का रेखा चित्र खींचकर उसमें दो खनिज तेल शोधन शोधनशालाओं को नाम सहित दर्शाइयें।
14. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के योगदान की विवेचना कीजिए।
15. आपदाओं का क्या अर्थ है? आपदाओं के प्रकार संक्षेप में बताइये।

(विस्तृत उत्तरीय प्रश्न)

16. विश्व के उष्ण मरूस्थलीय प्रदेशों का वर्णन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत कीजिए। (क) स्थिति एवं विस्तार (ख) कृषि (ग) प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव–जन्तु

अथवा

ब्राजील में कहवा की खेती पर टिप्पणी लिखिए।

17. भारत को भौतिक विभागों में बॉटते हुए किसी एक भाग को विस्तार से लिखिए।

अथवा

बहु–उद्देश्शीय नदी घाटी परियोजना से आप क्या समझते है? इस परियोजना के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

18. भारत की मिट्टियों का वर्गिकरण कीजिए और उनमें से किसी एक की विशेषताओं एवं विस्तार पर प्रकाश डालिये।

अथवा

नगरीकरण से उत्पन्न समस्याओं पर विवेचना कीजिए।

2016
भूगोल आदर्श प्रश्न पत्र
द्वितीय प्रश्न पत्र

उत्तर तालिका

(बहु विकल्पीय)

1. (क) साइबेरिया में
2. (घ) कनाडा
3. (ग) यूरो डालर
4. (ख) कच्चा तेल के लिए
5. (ख) गेहूँ

(अति लघु–उत्तरीय)

6. (1) सुपीरियर (2) मिशीगन
7. चीन के दो प्रमुख खाद्यान्न फसलें गेहूँ और चावल हैं। दोनों के ही उत्पादन में चीन विश्व में प्रथम स्थान बनाये हुए है।
8. (1) थाल घाट (2) भोर घाट
9. निकोबार द्वीप समूह में स्थित है। इसे 'इन्दिरा प्वाइण्ट' के नाम से जाना जाता है।
10. (1) कागज उद्योग (2) फर्नीचर उद्योग

(लघु–उत्तरीय)

11. विकासशील देशों की प्रमुख विशेषताएँ–
    (1) जनाधिक्य के कारण अनेक समस्याओं का उदय।
    (2) कृषि का पिछड़ापन एवं जनसंख्या का कृषि पर निर्भरता।
    (3) प्रौद्योगिकी एवं वैज्ञानिक तकनीक का पिछड़ापान।
    (4) प्रति व्यक्ति निम्न आय एवं निम्न जीवन स्तर।
    (5) शिक्षा एवं साक्षारता का निम्न स्तर।
    (6) बेरोजगारी, गरीबी, कुपोषण एवं अल्प स्वास्थ सेवाएँ।
    (7) निम्न कोटि की यातायात एवं संसार व्यवस्था।
    (8) पूँजी निर्माण की मन्द गति।
12. नील नदी मिस्त्र के लिये वरदान है। नील नदी के डेल्टाई क्षेत्र में उपजाऊ मिट्टी के कारण पार्याप्त कृषि होती है। देश के विकास की सबसे अधिक संभावनाएँ नील नदी की घाटी में है।
    (1) नील नदी प्रतिवर्ष अपने डेल्टा क्षेत्रों में जलोढ़ मिट्टी जमाकर अधिक उपजाऊ बनाती है।
    (2) नील नदी पर ॲस्वान बाध बन जाने से इस प्रदेश में सिंचाई की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध है।

13. भारत का रेखा चित्र

14. भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। देश की लगभग 70ः जनता कृषि पर ही प्रत्यक्ष रूप से निर्भर करती है। लगभग 64ः कार्यशील जनसंख्या कृषि सम्बन्धी कार्यों में संलग्न है। सकल राष्ट्रीय उत्पादन का 25ः कृषि से ही प्राप्त होता है। अनेक उद्योगों के लिए कृषि से ही कच्चा माल प्राप्त होता है। विदेशी व्यापार में भी कृषि पदार्थों का लगभग 14 : योगदान है।

15. प्रकृति एवं मानवीय क्रियाओं द्वारा उत्पन्न वे सभी घटनाएँ जो विनाशकारी रूप धारण कर मानव सहित सम्पूर्ण जैव–जगत के लिए विनाशकारी स्थिति उत्पन्न कर देती है। इस प्रकार आपदा अल्पावधि को एक असाधारण घटना है, जो देश की अर्थव्यवस्था को गम्भीर रूप से अस्त–व्यस्त कर देती है। आपदाएं मुख्य दो प्रकार की होती हैं–

(1) प्राकृतिक आपदाएं – प्राकृतिक रूप से उत्पन्न आकस्मिक घटनाएं जो प्रलयकारी सिद्ध होती है, प्राकृतिक आपदाएं कहलाती है।

(2) मानवकृत आपदाएं – मानवजनित आपदाएं मनुष्य की अविवेकपूर्ण नीतियों का परिणाम है। इन आपदाओं के लिए मानव का पर्यावरण के प्रति विरोधात्मक व्यवहार, समाजिक एवं धार्मिक मान्यताएं, अवैज्ञानिक सोच का विवेकहीन शिक्षा आदि कारक है।

(विस्तृत उत्तरीय)

16. **(क) स्थिति एवं विस्तार–** सहारा तुल्य प्रदेश दोनो गोलार्द्धो में 20^0 से 30^0 अक्षांशों के मध्य महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में पाये जाते है। सहारा मरूस्थल इस प्रदेश में सबसे अधिक विस्तृत है, जो लाल सागर से अन्ध महासागर तक 5500 किमी0 तक लम्बा तथा भूमध्यसागरीय तट से लेकर मध्य अफ्रीकी गणराज्य की सीमा तक 2000 किमी0 की चौड़ाई में विस्तृत है। यह मरूस्थल अरब सागर के पार ईरान तथा बलूचिस्तान से होता हुआ थार मरूस्थल तक विस्तृत है। विश्व के क्षेत्रफल का 17% भू–भाग इन मरूस्थलों द्वारा घिरा हुआ है।

(ख) कृषि– मरूस्थलीय क्षेत्रों के जिन भागों में मरूद्यान एवं पाताल–तोड़ कुएं पाये जाते है, वहां जनसंख्या के सघन संकेन्द्रण विकसित हुए है। इन क्षेत्रों के लोग कृषि कार्यो द्वारा अपनी आजीविका चलाते है। यहां रसदार फल, ज्वार, बाजरा, कपास, तम्बाकू, दालें, मक्का, चुकन्दर, तरबूज, अल्फाल्फा घास, प्याज एवं अन्य सब्जियों का उत्पादन किया जाता है। इन भागों में पर्याप्त खजूर के वृक्ष भी मिलते है। जिन भागों में नदियां उपलब्ध है, वहां सिंचाई द्वारा कृषि की जाती है। जैसे– सिन्धु एवं नील नदियों की घाटियों में कृषि का

विकास हो गया है। यहां गेहूँ, चावल, कपास, गन्ना, तम्बाकू, ज्वार–बाजरा, सरसों, राई आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है।

(ग) प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव जन्तु– उष्ण एवं शुष्क जलवायु के कारण इस प्रदेश में वनस्पति का अभाव पाया जाता है। यहां कांटेदार झाड़ियां प्रमुख वनस्पति है जो शुष्क जलवायु में भी जीवित रहती है। नमी को बनाये रखने के लिए इन पौधों की जड़े लम्बी, पत्ते रोयेंदार, मोटे एवं चिकने तथा छाल मोटी होती है। इसी कारण ये वाष्पीकरण के प्रभाव से बच जाते है। खजूर, ताड़, बबूल, कैक्टस, रामबांस यहां के प्रमुख वृक्ष है।

विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण इस प्रदेश में पशु–जीवन भी बड़ा की दुष्कर है। इस प्रदेश में ऐसे जीव–जन्तु पाये जाते है जो उष्ण एवं शुष्क वातावरण के अभ्यस्त हाते है। यहां दौड़ने एवं कूदने वाले छोटे–छोटे जीव–जन्तु पाये जाते है। पशुओं में ऊँट का

प्रमुख स्थान है। यह एक ऐसा पशु है जो कई दिनों तक बिना जल के भी जीवित रह सकता है। मरूस्थलीय क्षेत्र में अधिकांश कार्य इसी पशु द्वारा लिया जाता है। इसी कारण इसे रेगिस्तान का जहाज भी कहा जाता है। कुछ स्थानों पर भेड़–बकरियां भी पाली जाती है। शुतुरमुर्ग दूसरा मुख्य उपयोगी पक्षी है जो अफ्रीकी महाद्वीप में पाया जाता है। इसके पंखों का व्यापार भी किया जाता है जो बड़े कीमती होते है। अन्य जीव–जन्तुओं में छिपकली, लोमड़ी, एण्टीलोप्स, खरगोश, सियार एवं चूहे मुख्य है। पीरू तटीय क्षेत्रों में ग्वानों नामक पक्षी पाये जाते है।

अथवा

ब्राजील संसार का सबसे बड़ा कहवा उत्पादक देश है। यहां विश्व का लगभग 40% कहवा उगाया जाता है। ब्राजील में साओपालो, पराना, एस्पिरिटो, साण्टो और मिनास–गेरास प्रमुख्या कहवा–उत्पादक राज्य है। अकेला साओपालो राज्य देश का दो–तिहाई कहवा उत्पन्न करता है। ब्राजील में कहवा की खेती बड़े पैमाने पर व्यापारिक ढ़ंग से की जाती है, इसके लिए उत्तरदायी भौगोलिक कारक निम्नलिखित है–

1. अनुकूल उष्ण एवं आर्द्र जलवायु, पर्याप्त वार्षिक वर्षा (200सेमी)।
2. उपजाऊ पठारी एवं ढालू भूमि तथा पर्याप्त कुशल एवं सस्ता श्रम।
3. बागाती खेती का प्रचलन जिसके लिए पर्याप्त पूंजी और कुशल संगठन उपलब्ध है।
4. पर्याप्त विदेशी मांग नेयहां कहवा की खेती को एक लाभप्रद व्यवसाय बना दिया है।
5. सस्ते सागरीय जल परिवहन की सुविधाएं।

17. भारत को चार भौतिक प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है–

1. उत्तरी पर्वतीय प्रदेश
2. सतलुज–गंगा–ब्रह्मपुत्र का मैदान (विशाल मैदान)
3. प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश (दकन का पठार)
4. तटीय मैदान एवं द्वीप समूह

(किसी एक भाग को विस्तार से लिखिए)

अथवा

बहु–उद्देष्यीय परियोजना– देश के सर्वांगीण आर्थिक विकास एवं क्षेत्रीय नियोजन के लिए बहु–उद्देश्यीय या बहुध्येयी योजनाओं को क्रियान्वित किया गया है। बहुध्येयी योजनाओं का तात्पर्य

उन योजनाओं से है जिनका उद्देश्य एक से अधिक समस्याओं का समाधान करना होता है। इसीलिए इन्हें बहुध्येयी योजनाएं कहा जाता है। इनके उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है–

1. जलविद्युत शक्ति का उत्पादन करना
2. बाढ़ों पर नियन्त्रण तथा मिट्टी का संरक्षण करना
3. सिंचाई हेतु नहरों का निर्माण एवं विकास करना
4. मत्स्य उत्पादन का विकास करना
5. उद्योग धन्धों का विकास करना
6. पशुओं के लिए पेयजल की व्यवस्था करना
7. अन्तःस्थलीय जल–परिवहन का विकास करना
8. वृक्षारोपण तथा पशुओं के लिए हरे चारे की व्यवस्था करना।
9. प्राकृतिक सौन्दर्य, मनोरंजन व पर्यटन स्थलों का विकास करना
10. क्षेत्र का सर्वांगीण विकास करना

18. परम्परागत दृष्टिकोण से भारतीय मिट्टियों का विभाजन कछारी, लाल, काली (रेगड़), लैटेराइट आदि में किया जाता है। भारतीय मिट्टियों को निम्नलिखित तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेश की मिट्टियां
2. विशाल मैदान की मिट्टियां
3. प्रायद्वीपीय पठार की मिट्टियां

(किसी एक का विस्तार में वर्णन कीजिएं)

अथवा

नगरीकरण से आशय व्यक्तियों द्वारा नगरीय संस्कृति को स्वीकारना है। नगरीकरण की प्रक्रिया नगर से सम्बंधित है। भारत में नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएं निम्नानुसार है–

1. अपर्याप्त आधारभूत ढांचा और सेवाएं
2. परिवहन की असुविधा
3. अपराधों में वृद्धि
4. आवासों में कमी
5. औद्योगीकरण
6. द्वितीयक समूहों की प्रधानता
7. अवैयक्तिक सम्बन्धों की अधिकता
8. पारम्परिक सामाजिक मूल्यों की प्रभावहीनता
9. श्रम–विभाजन और विशेषीकरण
10. जातीय नियंत्रण का अभाव